मानव अधिकार और कोविड–१९ का बच्चों पर प्रभाव

उल्का शशिकांत फराकटे.राज्यशास्त्र अधिविभाग,शिवाजी विश्वविदयालय, विदयानगर, कोल्हापूर. ४१६००४. महाराष्ट्र. मो.नं. ९३५९८२५९४ १; ९५२७१६४६६९.

प्रस्तावना

मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसका संरक्षण किया जाना अत्यावश्यक है। इसी कारण मानव अधिकारों की बात प्राचिन समय से ही उठती रही है। अन्तर्राष्ट्रीय समाज में मानव अधिकारों की आवश्यकता द्वितीय विश्व युध्द के दौरान हुये भीषण नरसंहार एवं अमानवीय व्यवहार के कारण हुई। वर्तमान में मानव अधिकार संरक्षण आंदोलन का प्रारंभ संयुक्त राष्ट्रासंघ के घोषणा १० दिसम्बर, १९४८ में हुई थी। संयुक्त राष्ट्रासंघ भी बच्चों अधिकारों के संबंध में भी चिंतित रहा है, जिसके कारण २० नवम्बर १९५९ को बच्चों के अधिकारों का घोषण पत्र अलग से जारी किया गया। बच्चें राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण धरोहर हैं, बच्चें देश का भविष्य हैं, कल देश की बागडोर इन्हीं की हान्थों में होगी इसलिए बच्चों के हितों की रक्षा की जानी चाहिए जिससे बच्चों का सर्वागीण विकास हो सके। इस बात का ध्यान रखते हुए सबसे पहले सन् १९२४ में बाल अधिकारों के संबंध में जेनेवा घोषणा, २० नवम्बर १९५९ को बाल अधिकारों की घोषणा १० दिसम्बर, १९४८ मानव अधिकारों की विश्वव्यापी घोषणा की गई। नागरिक, राजनैतिक, अर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अधिकार, बच्चों के कल्याण से जुड़ी एजेंसियों, संस्थानों के संबध्द कानूनों एवं प्रपत्रों को मान्यता दी गई। जिसका उल्लेख अनुच्छेद १०, २३ एवं २४ में मिलता है। भारत में राष्ट्रीय बाल नीति १९७४, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग २३ फरवरी २००७ बच्चों के कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

१९९० के दशक की शुरवात में, जर्मन समाजशास्त्रज्ञं उलरिच बेक (Ulrich beck) ने "Risk Society: Towords a New Modernity" (1992) इस ग्रंथ में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज शास्त्रमें 'जोखिम समाज' कि संकल्पना स्पष्ट कि हैं, 'जोखिम समाज' एक ऐसी दुनिया है, जिसमें खतरे हैं, और अनिश्चितता कि तीव्र भावना हैं। इन खतरों से लढ़ने के लिए सुरक्षा के लिए सामाजिक संबंध और सामाजिक संस्थानों के बारे में व्यवस्था कि थी। इसका विवेचन इस ग्रंथ में किया हैं। इस ग्रंथ के लगभग तीन दशक बाद यह तर्क किया जा सकता है कि, आज हम एक जागतिक 'कोविड समाज' में रह रहें हैं। इस कोरोना महामारी नें दूनिया भर में उथल–पुथल मचाई हैं। इस कोरोना महामारी से हम लढ़ कर 'कोविड समाज' के बाद कि एक अच्छी दूनिया बना सकते है।

इतिहास में अब तक ऐसी कोई महामारी नहीं हुई, जिसने पूरी मानव जाति को इतना आधिक प्रभावित किया हो। जीवन की ऐसी कोई घटना नहीं, जिस पर कोविड–१९ का असर नहीं हुआ हो। इस महामारी की वजह से हमारे रहन–सहन और सोच–विचार के तरीके, शिक्षा, व्यवसाय, व्यापार, राजनिती, जन सुरक्षा, विदेश नीति, कानून, चिकित्सा, अर्थव्यावस्थाएँ, विकास की प्राथमिकताएँ, मनोरंजन से लेकर पारिवारिक रिश्तों में भी उथल–पुथल दिखाई दे रही हैं। कोविड–१९ का प्रभाव सभी पर पड़ा है। इस महामारी के कारण जीवन शैली में कई तरह के बदलांव आएं हैं। ये महामारी सिर्फ़ एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपदा नहीं हैं, बल्कि एक मानवीय, आर्थिक और सामाजिक संकट भी बनता जा रहा हैं। कोविड–१९ का बच्चों पर प्रभाव हुआ हैं, इसिलिए बच्चों कों सिर्फ कोरोना महामारी सेही सुरक्षित नहीं रखना हैं, बल्कि उनके मानसिक और शारिरिक विकास का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए हैं।

बाल आधिकर

अभी हम हर जगह एक ही नाम सुनते है, वह है कोरोना। कारण एक ही है, क्योंकि इसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है, और इसके भयानक रुप के बावजूद, हम इसे सही मार्गदर्शन और सावधनियों से रोक सकते हैं। राष्ट्र के बच्चे देश के भावी नागरिक है। कोई भी देश बच्चों की आवश्यकताओं के देखभाल की अनदेखी नहीं कर सकता है। एक बच्चा इस दुनिया में आने पर क्या सोचता है और उसके क्या विचार होते हैं। इन सब बातों को हम 'मेमी जेने कोल' की इन पंक्तियों में देख सकते है–

'' मैं बच्चा हूँ। सारी दुनिया मेरे आने की प्रतिक्षा करती है। पूरी पृथ्वी अभिरुचि के साथ आशा करती है कि मैं क्या बनूंगा। सभ्यता अधर में लटकी हुई है। जो आज मैं हूँ, कल की

दुनिया वहीं होगी। मैं बच्चा हूँ। आप अपनी मुट्ठी में मेरा भाग्या नियन्त्रित किए हैं, बहुधा, आप निर्धारित करते हैं कि मैं सफल होऊँगा या असफल। मुझे दें, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, वे चीजें जो मुझे प्रशिक्षित करें, मैं निवेदन करता हूँ, ताकि मैं दुनिया के लिए आशीर्वाद वरदान बन सकूँ।''

बालक के आधिकर के विषय में संयुक्त राष्ट्राने सन् १९४६ से ही प्रारम्भ कर दिया था। जब राष्ट्रासंघ के तत्वावधान में निर्मित जेनेवा घोषणा १९२४ को विश्व के सभी लोगों पर आबद्धकर बना दिया जाये। राष्ट्रासंघ द्वारा पारित जेनेवा घोषणा के चार बिन्दु इस प्रकार हैं—

- बालक के सामान्य विकास तात्विक और आध्यात्मिक के लिए अपेक्षित साधनों को प्रदान किया जाना चाहिए।
- वह बालक जो भूखा है, उसे खिलाया जाना चाहिए। वह बालक जो बीमार है, उसे सहायता दी जानी चाहिए। वह बालक जो पिछड़ा है, उसे बढ़ने में सहायता दी जानी चाहिए, अपराधी बालक को सुधारना चाहिए।
- संकट के समय बालक को सबसे पहले राहत मिलनी चाहिए।
- बालक को ऐसी स्थिति में रखा जाए कि वह जीविका अर्जन कर सके और हर प्रकार के शोषण के विरुद्ध उसकी रक्षा की जानी चाहिए।

कोविड–१९ का बच्चों पर प्रभाव जागतिक प्रतिक्रियाँ

डच एनजीओ किड्स राईट्स के अनुसार बच्चों की हित में किए गए सालों कें प्रयासों और प्रगती को, कोरोना महामारी का संकट कई साल पिछे ले जाएगा। इसिलिए, बच्चों कें आधिकारों पर पहले ज्यादा ध्यान देने कि जरुरत हैं। एनजीओ कें संस्थापक मार्क डूलार्ट ने अपना सालाना सर्वेक्षण पेश करते हुए यह कहा कि,'ये महामारी जिसकी वजह से आज सरकारों के पास स्वास्थ्या और शिक्षा के लिए पैसे नहीं हैं, कल लाखों बच्चों गरिबी की दलदल में ढकेल देगी।'

संयुक्त राष्ट्रासंघ के महासचिव एंतोनियो गुटेरेश ने कहा कि कोविड–१९ का समाज के निंधनतम और निंबलत्म लोगों पर भी बहूत खतरनाक प्रभाव हैं, इस महामारी से निपटने के उपाय भी महासचिव ने बताए हैं। इसका बच्चों पर प्रभाव हो सकता हैं, दुनियाँ भर की बच्चोंओं के बारे में महासचिव ने चिंता व्यक्त कि हैं, ज्यादातर बच्चें अभी इस बीमारी के बहुत गंभीर लक्षणों से बचे हुएँ हैं। लेकिन उनकी जिंदगीयाँ पुरी तरह से उथल–पुथल हो गई हैं।'

भारत में यूनिसेफ की प्रतिनिधि डॉ यास्मीन अली हक ने कहा की, ' कोरोना महामारी द्वारा कम लेकिन अप्रत्यक्ष और दीघकालिन नतीजों से बहुत अधिक, विशेष रुप से कमजोर बच्चों की कोमलता को उजागर किया हैं। लाखों कमजोर बच्चों अपने विकास और सीखने के अवसरों, जीवित रहने और आगे बढ़ने के अपने अधिकार खो रहे हैं। सबसे कमजोर परिवारों को आघातशोषक सामाजिक सुरक्षा योजनाओं द्वारा संरक्षित करने कि आवश्यक्ता है जो उन्हें स्वास्थ्य सेवा बच्चों की स्कूली शिक्षा और पोषण और आवश्यक सेवाओं का खर्च उठाने में मदद कर सकते हैं।

भारत में कोविड–१९ का बच्चों पर प्रभाव

भारत में राष्ट्रीय मानव आधिकार आयोग ने बच्चों पर कोविड–१९ प्रभाव को देखते हुए बच्चों के आधिकार के संरक्षण और भविष्य के जोखिमों को देख कर सभी हितधारकों द्वारा अधिक से अधिक तैयारी करने का आव्हान किया। कोविड–१९ के दौरान स्वास्थ, शिक्षा, बाल देखभाल और अनाथ बच्चों इन चार प्रमुख क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया हैं। इस जागतिक स्वास्थ्य आपदाएं से निपटने के लिए मानवधिकारों कि भुमिका महत्वपूर्ण हैं, और मानव कल्याण के लिए मानवधिकार जरुरी हैं।

भारत में तालाबंदी की वजह से बच्चों में असामान्य बर्ताव, गुस्सेवाला व्यवहार पैदा हो गया है। कोविड–१९ की दुसरी लहर के दौरान टीवी और मोबाईल पर आधिकतर समय गुजारने; बच्चों का कोई सामाजिक मेल–जोल नहीं होने और माता–पिता को पर्याप्त समय बच्चों के लिए नही देने इन कारणों से सभी उम्र वर्ग के बच्चों पर मनोवैज्ञानिक असर पडा हैं। उदा. द्वारका में आकाश हेल्थकेयर में बालरोग तज्ज्ञ डॉ. मीना जी ने कहा कि, बडे उम्र के बच्चों में चिडचिडापना, बैचनी, घबराहट और व्यवहार से जुडी समस्याएँ हो रही है, तो दो से तीन साल कि उम्र के बच्चों में देरी से विकास हो रहा है। जो बच्चे न तो किशोर हैं और नाहीं छोटे है,उन्है

पढने मे दिक्कत, गुस्सा दिखाना, सामाजिक दुरी बनना जैसी व्यवहारगत दिक्कतें आ रही हैं। इसका मुख्या कारण कोविड–१९ का संक्रमण की दुसरी लहर की गंभीरता और तिसरी लहर का डर हैं।

भुखमारी और कुपोषण के शिकार बच्चे भीख माँगते, कचरा बीनते, चाट–चाय के ठेलों पर जूठे बर्तन धोते, मजदूरी करते बच्चों की एक अलग ही आधिकार हनन की काहानी हैं, और तो और बच्चों पर कोविड–१९ का अलग ही प्रभाव पड़ा हैं। और इससे ज्यादा खतरे हो सकते है। इसिलिए कोविड–१९ से बच्चों को बचाने के लिए, बाल अधिकारों और बच्चों संबंधित कानुनों और कार्यक्रमों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करना होगा। और बाल मानव अधिकार संरक्षण की दिशा में कारगर कदम उठाना हैं, तो हमें हमेशा ही बच्चों के प्रति संवेदनशील रहना होगा। बच्चे राष्ट्र की महत्वपूर्ण संपत्ति हैं, उनकी देखभाल करना हमारी जिम्मेदारी है।

कोविड–१९ का मुख्य प्रभाव क्षेत्र

बच्चों के शिक्षा, भोजन, सुरक्षितता और स्वास्थ इन मुख्य क्षेत्र पर कोविड–१९ का मुख्य प्रभाव हुआ हैं। इन क्षेत्र को हम विस्तार से देख सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में

महामारी का असर पूरी दुनिया की शिक्षा पर पड़ा है। खासतौर से जो बच्चों डिग्री पूरी कर रहे है या नौकरी पर जाने की तैयारी कर रहे है या स्कूल की पढ़ाई पूरी कर के ऊंची कक्षा में जाने वाले हैं। कम खर्चे से चलाने जाने वाले स्कूल बंद हो कर कई अध्यापकों के रोजगार चले गए।

तालाबंदी के समय लगभग सभी बच्चे स्कूलो से बाहर है, कुछ स्कूल दुरस्थ शिक्षण महंगा कर रहे है, लेकिन ये सभी बच्चों को उपलब्ध नहीं है। धीमी और महंगी इंटरनेट सेवाओं से ज्यादातर बच्चें इनसे वंचित हैं। उदा. शहरों में इंटरनेट सेवा अच्छी तरह से काम करती है,लेकिन गांवों में इंटरनेट सेवा धीमी होती है, लॅपटॉप, मोबाईल जैसे माध्यामों कि कमतरता होती है। इन कारणों से सभी बच्चों को शिक्षा उपलब्ध नहीं होती हैं। ऑनलाइन पढ़ाई का प्रचार आकर्षक है, पर व्यावाहरिक परिस्थितियां उतनी आकर्षक नहीं। कई गरीब परिवारों में एक स्मार्टफोन भी नहीं हैं, जिन परिवारों में स्मार्टफोन हैं वे आर्थिक परिस्थितियों कारण रिचार्ज नहीं कर पातें। ऑनलाइन शिक्षा आकर्षक लगती है, पर छात्र और अध्यापकों के आमने–सामने से जो बात बनती है, वह इस ऑनलाइन शिक्षा में निर्माण नहीं हो सकती।

कोविड–१९ के संक्रमण के वजह से स्कूल बंद हैं। ऐसे में बच्चों कि दिनचर्या में भी बदलाव हुआ हैं। किसी भी वक्त खाने पिने और सोने के वजह से उनकी सेहत बिघडति जा रही हैं, और नींद पुरी न होने से नींद से जूडी समस्याएँ निर्माण हा रही हैं। एक जगह लगातार रहना, दोस्तों, स्कूल से दूरी इन कारणों सें बच्चों में तनाव निर्माण हो रहा हैं, और कोविड–१९ के संक्रमण का डर भी तनाव को बढ़ रहा हैं, इससे वे अपनी शिक्षा में मन नहीं लगा पा रहे।

भोजन के क्षेत्र में

जागतिक आर्थिक मंदी के कारण परिवारों में वित्तीय अभाव हैं। और बच्चों के भोजन, खाद्य पदार्थो की जरुरतों पर खर्चे में भी परिवारों को कटौती करनी पड़ रही हैं। उन बच्चों के बारे में भी सोचना होगा, जिनका पेट स्कूलों में चलाने वाली मध्याह्न भोजन योजना (Midday meal scheme) की वजह से भरता था। पौष्टिक आहार की बात छोडो दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती। इससे बच्चों में भूखमारी और कुपोषण के शिकार हो रहे हैं।

दुनिया भर के लगभग १८८ देशों में स्कूल बंद होने के कारण १.५ बिलियन बच्चे स्कूल से बाहर है। यह उन बच्चों के लिए मुश्किल है, जिनका भोजन स्कूल पर निर्भर हैं। १४३ देशों में लगभग ३६८.५ मिलियन बच्चे स्कूल के भोजन पर निर्भर हैं। तालाबंदी से इन बच्चों में कुपोषण की संभावना बढ़ जाएगी।

सुरक्षितता के क्षेत्र में

सभी बच्चें स्कुलो से बाहर है, उनके परिवार तालाबंदी में हैं, और जागतिक आर्थिक मंदी तेजी से बढ़ती जा रहीं हैं। ऐसे में परिवारों में दबाव का स्तर बढ रहा हैं। बच्चें घरेलू हिंसा और दुरव्यवहार से पीडित और असाह्य दर्शक दोनों बन रहे हैं। स्कुल बंद होने कें कारण अहम अग्रिम चेतावनी प्रणालीयाँ गायब हैं। लडकियों कें स्कुलो से बाहर हो जाने का खतरा भी हैं, और ये स्थिती किशोरावस्था में गर्भधारण के मामले बढ़ोत्तरी का कारण बन सकते हैं। और हम

इस स्थिती को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। बच्चे अब ज्यादा वक्त ऑनलाईन पर गुजारते हैं,जिससे उनके लिए खतरे भी बढ़ रहे हैं। इससे बच्चे ऑनलाईन यौन शोषण और बहकाने–फुसलाने का शिकार हो सकते हैं।

दोस्तो और संगी साथियों के मुलाकातें नहीं होने के कारण और अकेलापण महसूस होने के कारण जोखिम भरे हालात पैदा हो सकते हैं। वों योन आधरित तस्वीरों का आदान प्रदान लगे साथहि ज्यादा वक्त ऑनलाईन पर गुजारनें के कारण बच्चें हानिकारक व हिंसक सामग्री चपेट में आ सकते हैं। और डरा धमकाने का भी शिकार हो सकते हैं। इसिलिए बच्चों को सुरक्षित रखने में सरकारों और परिवारों कि अहम भुमिका हैं।

बच्चों के माता–पिता कोविड–१९ से मृत्यु के कारण आज लाखों बच्चों अनाथ हो गए हैं। इन बच्चों का शोषण, बाल तस्करी, भीख मांगने और दुरव्यावहारों कि चपेट में जाने से पहले उनके आधिकारों कि रक्षा करना जरुरी हैं।

स्वास्थ के क्षेत्र में

परिवारों पर कोविड–१९ का संकट आने पर खर्चे ज्यादा और अमदनी कमी होने के कारण उन्हें स्वास्थ्य और खाद्य पदार्थो की जरुरतों पर खर्च में भी कटौती करनी पड़ेगी जिससे विशेष रुप से बच्चें और महिलाओं पर आधिक प्रभाव पड़ा हैं। वित्तीय अभाव के कारण बच्चों कि सामाजिक भावनात्मक दक्षताओं, संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक सफलता को कमजोर कर सकता हैं, इससे बच्चों कि मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ सकता हैं।

बच्चों की दुर्दशा के लिए कोविड–१९ से निर्माण हुई कमजोर आर्थिक स्थिति अधिक जिम्मेदार होती है। गरीब माता–पिता अपने बच्चों को सही पोषण, शिक्षा और सुरक्षित माहौल उपलब्ध नहीं करा पाते हैं। इसिलिए बाल शोषण इसी वर्ग में सबसे अधिक होता है।

छोटे बच्चों को सामाजिक भेद का मतलब समझाना मुश्किल हैं। पर हम इसे नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं कि बच्चें समुदाय आधरित प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। छोटे बच्चों को तनाव और अकेलापण का खतरा होता है। घरेलू हिंसा, बाल विवाह और बाल गर्भावस्था के मामले दुनिया भर में बढ़ गए हैं।

जागतिक आर्थिक मंदी तेजी से पकड रहीं हैं। एक सार्वजनिक स्वास्थ के आपदा के रुप में शुरु हुई इस बीमारी ने तहलाका मचाया हैं। दुनिया भर के देशों के सरकारों और दानदाताओं नें सभी बच्चों की शिक्षा, भोजन, सुरक्षितता और स्वास्थ इन पर प्राथमिकता देने की पुकार लगाई हैं।

परिवार के सदस्य क्या कर सकते है।

बच्चों के विकास में परिवार की अहम भुमिका होती हैं, इसिलिए बच्चों का हर दिन का रुटीन बनाकर उनमें खाना–पिना–सोना, खेलना–कुदना, शिक्षा, अच्छी आदते विकसित करना, मनपसंद कार्य करने के लिए प्रेरित करना, योगा, कसरत, नृत्यकलाएँ सिखाना, परिवार के सदस्य बच्चों कें साथ समय बिताना इन आधार पर बच्चों कों अकेलेपण से बचा सकते हैं, उनका मानसिक और शारिरिक विकास पर भी पूरा ध्यान दे सकते हैं।

कोरोना महामारी की वजह से बच्चों की शिक्षा पर भी असर पड़ रहा है। इस समय जरुरी है की घर के सदस्य या माता–पिता बच्चों की पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें पढ़ाई का समय बनाकर और उस समय उनको पढ़ाई करने के लिए पेरित करें। घर से बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए ऑनलाईन माध्यमोंका सहारा लेने का सुझाव दें। इनमें टीवी, रेडियो, ऑनलाईन पढ़ई लिखाई सिखाते हैं।

अक्सर बच्चें अपने खेलों में इतने खो जाते है, कि बच्चों को खाने–पिने का ध्यान भी नहीं रहता इसिलिए समय पर बच्चों को खाने–पिने का ध्यान रखाना चाहिए। इसी तरह सोने–जागने का समय निश्चित किया तो बच्चों को निंद से जुडी संबंधित समस्याओं का सामना नहीं करना पडेगा। बच्चों के लिए शिक्षा के साथ खेलना–कुदना भी जरुरी हैं, बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए खेलना आवश्यक हैं। कहा जाता है कि जो आदते बच्चोंओं को बचपन में सीखा दी जाती है उन्हें वो जिंदगी में कभी नहीं भुलते। परिवार में उन्हें अच्छी–अच्छी आदते सीखा सकते हैं। रोज ब्रश करना, योगा एवं कसरत करना, अच्छे से तैयार होना, हाथ धोना और साफ–सफाई रखने से कोरोना महामारी से बचाने के लिए साफ सफाई का महत्व समझाना।

तालाबंदी के समय कई बच्चों अकेलापन महसूस करने लगे हैं, बच्चों को इस अकेलापन से दूर करने के लिए उन्हें मनपसंद काम करने के लिए प्रेरित करें बहुत से बच्चों को चित्रकारी, नृत्यकला का शोक होता हैं, उन्हें मनपसंद चीजों को करने से न रोकें। बच्चों के साथ समय व्यतित करने से बच्चों का अकेलापन दूर हो सकता हैं।

बच्चों से उनका बचपन छीन लेना बच्चों के मानवाधिकारों के हनन् का सबसे बड़ा दृष्टांत हैं, जो कि बाल अत्याचार की श्रेणी में आता है। बच्चों की बुनियादी जरुरतें पूरी हो सकें उन्हें शिक्षा और मानसिक व शारीरिक सुरक्षा का माहौल मिले तो भाविष्य में एक बेहतर समाज का निर्माण किया जा सकता है। वस्तुत: यह कार्य इकाई रुप में आगे बढ़ने से ही संभव हो सकेगा,जिसकी शुरुवात परिवार से हो और आगे समाज एवं देश इसे पूरा करे।

सारंश

कोविड–१९ एक मानवीय, आर्थिक और सामाजिक संकट हैं इस आपदा से उबारने के प्रयासों में हमे बेहतर दूनिया बनानी होगी, जिसमें सर्वसमावेशी अर्थव्यवस्था और सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास लक्ष्यों पर आधरित होगी। ऐसे में इस महामारी ने पूरी दूनिया भर के परिवार, माता–पिता और बच्चों को जोखिम में डाला हैं। बच्चों के शिक्षा, भोजन, सुरक्षितता और स्वास्थ इन मुख्य क्षेत्र पर कोविड–१९ का मुख्य प्रभाव हुआ हैं। भारत के पुर्व राष्ट्रपती डॉ. ए.पी.जी अब्दुल कलाम जी ने कहा था कि, बच्चें देश का भविष्य हैं। इसिलिए हमें बच्चों कि सुरक्षा सुनिश्चित करके उनकी जिन्दगी को बेहतर बनाने के लिए हमें काम करना चाहिए....

संर्दभ ग्रंथ

- भावना वर्मा,नरेन्द्र शुक्ला,'मानव अधिकार के विविध आयाम' पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर,२०१२.
- सत्यार्थी कैलाश,' कोविड–१९ सभ्यता का संकट और समाधान' प्रभात प्रकाशन, नवी दिल्ली, २०२०.
- जागीर मुकेश,'कोविड–१९ संकट और बच्चों पर इसका विनाशकारी प्रभाव', दैनिक जागरण,२०२०.
- Bornstein Marc H.,"psychological insights for understanding COVID-19 and families, parents and children" Published by Routledge Taylor & Francis Group, London & New York, 2021.
- Lupton Deborah; willis Karen "The COVID-19 crisis: social perspective" Published by Routledge Taylor & Francis Group, London & New York, 2021.
- दैनिक जागरण
- दैनिक अमर उजाला
- दैनिक भास्कर
- दैनिक नवभारत
- https://news.un.org
- https://www.nhrc.nic.in
- https://www.amarujala.com
- https://www.tv9hindi.com